श्री गणेशाय नमः

श्री कृष्णनाम माला

पार ब्रह्म परमेश्वर श्रीगोलोक उजागर गोपवंश जस वर्धन श्रीयशुमति जीवन धन नन्दराय आनन्द घन श्रीस्वामिनि हर्ष बढ़ावन गोपी नेह निबाहन पूतना मुक्ति पठावन शक्टा सुर गति दायन त्रणावृत हति प्राणनि कंस को जीय डरावन बालकेल मन भावन बृजवासिनि हींय हुलसावन सालिग्राम मुख पावन मात तात मन मोहन

जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण

जै श्री कृष्ण

हंसि हंसि माटी खावन मैया लकुटि डरावन मुख त्रिलोक दिखावन घर घर माखन चुरावन ऊखिल दाम बंधावन यमलार्जुन शाप छुड़ावन मरिग दान उगाहन गोपी रारि बढ़ावन ले उरहन सब आवन करि दर्शन मन भावन नन्द एकादशि विरितन वरुण दूत ले जावन वरुण लोक कीय पावन नन्दराय ले आवन माता सोच मिटावन गोपनि वैकुण्ठि दिखावन बन बन धैनु चरावन ग्वालिन झुठिन खावन ब्रह्मा मोह उपजावन

जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण

ग्वाल और बछ चुरावन दूजे रचे मन भावन ब्रह्मा शक्ति दिखावन

स्तुति करि चतुरानन ग्वालिन गेंद खिलावन श्रीदामा रारि बढ़ावन मलीदह को धावन काली गर्व नशावन गरुड़ से अभय करावन कंस को फूल पठावन यमुना जल कियो पावन दावानल पान करावन गोवर्धन पूजा करावन सहस भुज रूप दिखावन इन्द्र को कोपु बढ़ावन प्रलय मेघ पठावन श्रीगिरिवर नख धारन आए इन्द्र मनावन गोविन्द नाम धरावन

जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण

जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण बृज के दूख नशावन गोपी देव मनावन स्तुति की कात्यायन गोपी चीर चुरावन बृज देविनि मन भावन कानन मुरली बजावन

सब गोपिनि आवाहन तन मन सुरति भुलावन सब उन्मति हो धावन पतिव्रत धर्म सिखावन गोपी प्रेम दृढ़ावन भए प्रसन्न मन मोहन शरद निशि रासि रचायन गोपी गर्व बढ़ावन भए गुप्त मन भावन बन बन गोपी रोवन लीला में चित लावन शुद्धि प्रेम से प्रघटावन महामंगल रासि रचावन

जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण

जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण

जै श्री कृष्ण

आए देव मनावन
मदन को गर्व मिटावन
दुर्गा पूजन जावन
अजगर नन्द डसावन
श्रीकृष्ण कृष्ण रट लावन
सर्प की मुक्ति करावन
वृन्दावन धेनु चरावन
ग्वालनि भूख सतावन
द्विज पत्नी भोजन याचन

ले चले सब हरिषत मन प्रेम भक्ति वर पायन शंखचूड़ गति दायन कंस को यज्ञ रचावन अकरूर बृज पठावन आए श्री वृन्दावन चरण चिन्ह कियो वन्दन धाइ मिले मन मोहन ले आए नन्द आंगन श्रीयशूमति शंकित मन जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण

जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण मथुरा हित लिलचावन बृजवासिनि वुह सतावन श्रीयशुमति किय विरलापन ले चले नन्द आनन्द घन चतुर्भुज रूप दिखावन आए मथुरा मोदन कियो कुबिजा रूप सुहावन धनुष भंग कियो मोहन कंस के प्राण निकन्दन मात तात बंध मोचन जै जै धुनि की संतनि फिर आइ बसे वृन्दावन दौड़ि मैया गलि लावनि वृज गोपिनि मिले मन मोहन श्रीस्वामिनि वर श्रीकृष्ण

अचलु राजु वृन्दावन

जै श्री कृष्ण जै श्री कृष्ण